REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2021

शिक्षा मनोविज्ञान का महत्व

डॉ. गोपाल पाल
देवघर महाविद्यालय,देवघर

भूमिकाः–

शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें शिक्षार्थी के व्यवहार का शैक्षिक परिस्थितियों तथा वातावरण में अध्ययन किया जाता है। यह एक प्रकार से सीखने और सिखाने का मनोविज्ञान है जो इस बात की जानकारी देता है कि पढ़ने और पढ़ाने तथा सीखने और सिखाने की क्रिया और परिस्थितियों आदि को किस तरह नियोजित एवम् संगठित किया जाये जिससे शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की सर्वोत्तम उपलब्धि संभव हो सके। दूसरे शब्दों में अध्यापकों को ठीक प्रकार से अध्यापन कार्य कर सकने तथा विद्यार्थियों को ठीक प्रकार से शिक्षा प्राप्त करने में मनोविज्ञान की इस शाखा द्वारा उपयुक्त भूमिका निभाने का कार्य किया जाता है। इसके अतिरिक्त अपनी विशेष पाठ्य–सामग्री द्वारा शिक्षा मनोविज्ञान, निर्देशन तथा परामर्श प्रदान करने का कार्य भी करता है। इस तरह बालाकों के व्यक्तित्व का सर्वागीन विकास करने तथा उन्हें भली–भांति समायोजित होने में सहायता करने की सफल भूमिका भी शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा निभाने का कार्य किया जाता है।

शिक्षा मनोविज्ञान के उद्देश्य :

शिक्षा मनोविज्ञान का उद्देश्य शिक्षर्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीन विकास करना तथा साथ ही साथ मानव स्वभाव को समझने में शिक्षकों की मदद करना है। शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के अभाव में एक शिक्षक का स्थान कुछ वैसा ही होता है जैसा किसी मोटरगाड़ी में बैठे चालक की जिसका गाड़ी का पेट्रोल समाप्त हो गया है। शिक्षा मनोविज्ञान का प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को शिक्षा–संबंधी आवश्यक मनोविज्ञानक तथ्यों से अवगत कराकर उनके कार्यों में सहायता प्रदान करना है।

शिक्षा मनोविज्ञान के विशिष्ट उद्देश्यों को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता हैः–

1. **शिक्षकों की सहायता करना (To help teachers)** – शिक्षा मनोविज्ञान का सबसे प्रमुख उद्देश्य शिक्षकों को अपने कार्यों में मदद करना होता है। इसका उद्देश्य शिक्षक को इस लायक बना देना है कि उसके कंधों पर औपचारिक शिक्षा के रखे गए भार को वह आसानी से ढो सके।

2. **उचित शैक्षिक निर्देशन देना (To impart proper educational guidance)** – प्रत्येक बालक की मानसिक क्षमता, अभिरूचि, अभिक्षमता अलग–अलग होती है । शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों की इस वैयक्तिक

विभिन्नता को समझकर सही दिशा में यह निर्देशन देता है कि विभिन्न विषयों में से किस विषय की शिक्षा लेनी चाहिए और क्यों लेनी चाहिए।

3. उचित पाठ्यक्रम बनाना (To make proper curriculum)– पाठ्यक्रम की रचना करते समय शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को विशेष रूप से दिशा–निर्देश देता है कि शिक्षार्थियों की मानसिक क्षमता, अभिरूचि एवम् अभिक्षमता को अवश्य ध्यान में रखा जाय।

4 उचित व्यावसायिक निर्देशन प्रदान करना (To impart proper vocational guidance) – कुछ व्यवसाय में कुछ विशेष अभिक्षमता रखनेवाले बालक अधिक सक्षम होते है तो दूसरे व्यवसाय में दूसरे तरह के अभिक्षमतावाले बालक अधिक सक्षम होते है। शिक्षा मनोविज्ञान इस उद्धेश्य की प्राप्ति के लिए शिक्षार्थियों को उचित निर्देशन देता है।

5.उचित अध्यापन विधि प्रस्तुत करना (To provide proper teaching method)– शिक्षा मनोवैज्ञानिकों द्वारा सक्रिय प्रयास करके अध्ययन की तरह–तरह की विधियों का प्रतिपादन किया गया है।

6 स्कूल के अधिकारियों एवम् प्रशासकों की मदद करना (To help the school authorities and administrators) – शिक्षा मनोविज्ञान स्कूल से संबंधित अधिकारियों एवम् प्रशासको को स्कूल संचालन एवम् शिक्षा के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार करने में मदद करता है। शिक्षा मनोविज्ञान स्कूल के अधिकारियों एवम् प्रशासकों को शिक्षा–शिक्षार्थी संबंध को समझने में मदद करता है।

7. शिक्षर्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीन विकास करना (To develop wholesome personality of learners)– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थी के चहुँमुखी विकास पर समुचित प्रकाश डालकर बालकों में एक ऐसा व्यक्तित्व विकसित करने पर बल डालता है जो उसे शैक्षिक वातावरण में अर्थपूर्ण समायोजन करने में मदद करता है।

8. अभिभावकों का मार्गदर्शन करना (To guide the gurdians)– कुछ अभिभावक ऐसे होते है जो आपने बच्चों की मानसिक योग्यता, अभिरूचि तथा अभिक्षमता का बिना ख्याल किए ही किसी खास विषय या किसी खास प्रकार के कौशल को सीखने पर बल डालते हैं। इसका परिणाम होता है कि ऐसे बालक की शिक्षा असफल हो जाती है। शिक्षा मनोविज्ञान ऐसे अभिभावकों का उचित मार्गदर्शन करता है तथा साथ–ही–साथ उन्हें अपनी शारीरिक एवम् मानसिक कमजोरियों से अवगत कराता है ताकि वे अपने –आप में समुचित परिवर्तन लाकर अपने बच्चों की उचित शिक्षा में मदद करें।

9. मूल्यांकन की उचित विधियों की प्रस्तुत करना(To provide proper methods of evaluation)– उचित विधियों की खोज के लिए शिक्षा मनोविज्ञान द्वारा विभिन्न प्रकार के मनोवैज्ञानिक परीक्षण जिनमें मूल रूप से विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण के नाम अधिक मशहूर का निर्माण किया गया है। शैक्षिक उपलब्धियों का उचित मूल्यांकन करने के बाद ही यह पता चल पाता है कि बालक शिक्ष से लाभ उठा रहा है या नही।

10. शारीरिक शिक्षा प्रदान करना (To provide physical education)– शिक्षा मनोविज्ञान कुछ विशेष प्रकार की आदतों के सीखने पर बल डालता है। इन आदतों को सीख लेने से बालकों का शारीरिक स्वास्थ्य तो सुधरता ही है, साथ–ही–साथ उनकी अध्ययन आदत में भी सुधार हो जाता है और बालक शिक्षा से उचित फायदा उठाने लगता है।

11. समूह भातिकी को समझने में मदद करना (To help understanding group dynamics)– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को उन अस्त्र–शस्त्रों से लैस करता है जिनके सहारे वे वर्ग में समूह शतिकी या शिक्षार्थी के समूहों में विभिन्न प्रकार के ससंजक बल(Cohesive force) तथा विनाशकारी बल को समझकर उचित निर्णय कर सकें।

अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व–

शिक्षा मनोविज्ञान के ज्ञान के द्वारा अध्यापक बालको का उचित मार्गदर्शन करने तथा निर्देश देने में दक्षता प्राप्त करता है। शिक्षा मनोविज्ञान एक अध्यापक को सफल बनाने और शिक्षा संबंधी अपने उत्तरदायित्वों को भली–भाँति निभाने में बहुत मद्द करता है। शिक्षा मनोविज्ञान एक ऐसा उपयोगी विषय है जो अध्यापक की पग–पग पर सहायता करता है। अध्यापक शिक्षा मनोविज्ञान के अध्ययन से बालकों का अनेक प्रकार की परिस्थितियों में उचित सामंजस्य स्थापित करने में मार्गदर्शन कर सकता है। कुछ **विद्वानों** के विचार नीचे दिये जा रहें है:–

क्युनटिलीयन(Quintilian) : क्युनटिलीयन–जो की प्रथम शताब्दी (First Century A.D.) में इटली के प्रसिद्ध विचारक थे, ने लिखा है, "अच्छे वक्ता प्रशिक्षित करने के लिए अध्यापक को बच्चों की प्रकृति से परिचित होना चाहिए।"

थोमस फुलर(Thomas Fuller 1608-1661) जो कि इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध लेखक पादरी थे, ने कहो है, " एक प्रभावी अध्यापक को बच्चों के स्वभाव का उतना ही अधिक अध्ययन करना चाहिए जितना की पुस्तकों का।"

पस्तालोजी,जे.एच.(Pestsolzzi,J.H. 1746-1827) ने कहा है "में शिक्षा को मनोवैज्ञानिक रूप देना चाहता हूँ।"

जॉन एडमस (Johan Adams 1857-1934) जो की लन्दन विश्वविद्यालय में शिक्षा–विषय के प्रोफेसर थे–ने इस बात पर बल दिया है। "अध्यापक को जॉन(अर्थात छात्र) तथा लेटिन(Latin) भाषा दोनों को जानना चाहिए।

स्किनर(Skinner) के अनुसार "अध्यापकों के प्रशिक्षण में शिक्षा मनोविज्ञान आधारशिला है।"

ब्लेयर (Blair) ने लिख है, "आधुनिक अध्यापक यदि अपने कार्य मे सफलता प्राप्त करना चाहता है, उसे ऐसा विशेषज्ञ होना चाहिए जो बालकों को समझें, वे कैसे विकसित होते हैं, सीखते हे, तथा कैसे समायोजन करते हैं। मनोवैज्ञानिक विद्वानों(Diagnosis) में प्रशिक्षित व्यक्ति शायद ही अध्यापकों के दायित्वों तथा कार्यों को निभा सकें।"

हेनरी पी.स्मिथ(Henry P. Smith) ने शिक्षा मनोविज्ञान को अध्यापक के लिए आवश्यक निम्न कारणों से बताया है :–

अध्यापक को अपने छात्र–छात्रों की प्रकृति, स्वाभाव तथा आवश्यकताओं की जानकारी प्राप्त होती है। अध्यापक को शिक्षा के व्यापक अर्थो एवम् अधार उद्देश्यों का बोध होता है। अध्यापक को छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक स्तर पर छात्र की क्षमताओं तथा योग्यताओं आदि का बोध होता है। अध्यापक की व्यावसायिक क्षमताओं का कुशलता मे वृद्धि करने में कई महत्त्वपूर्ण तथ्यों की जानकारी शिक्षा मनोविज्ञान मे होती है।

स्वामी विवेकानन्द ने इस प्रकार कहा है, "सच्चा अध्यापक अपने छात्र के मन की वास्तविकता जान लेता है। श्री अरविन्द ने इस बात पर बल दिया, " बालक की शिक्षा उसकी अपनी प्रकृति के अनुसार हो।"
मुख्य तौर पर अध्यापक के लिए शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व नीचे दिय जा रहा है:–

1. छात्रों के विकासात्मक विशेषताओं को समझने में (To understanding developmental characteristics of students)– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षकों को छात्रों की विकासत्मक अवस्थाओं

(शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था) की विशेषताओं से अवगत कराकर उनके पठन–पाठ्न के स्तर को उच्च करने में काफी मदद करता है।

2. **कक्षा के शिक्षण के स्वरूप को समझने में** (In understanding the naure of classroom learning)– शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व इसलिए भी है कि मनोविज्ञान सीखने की प्रक्रिया के बारे में सामान्य रूप से तथा कक्षा शिक्षण के बारे में विशिष्ट रूप से ज्ञान प्रदान करता है। इस तरह के ज्ञान के आधार पर कक्षा शिक्षण के बारे में एक विस्तृत सिद्धांत तैयार करने में मदद मिलती है।

3. **शिक्षार्थियों की समस्याओं को समझने में** (In understanding problem of learners) – विभिन्न उम्र–स्तर के छात्र अलग–अलग समस्याएँ दिखलातें हैं जिनकी पहचान करने में शिक्षकों को शिक्षा मनोविज्ञान काफी मदद करता है। समस्याओं का पता लगने से उचित शैक्षिक निर्देशन देने में मदद मिलता है।

4. **शिक्षार्थियों में धनात्मक मनोवृति के विकास में**(In developing positive attitude of learners)– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षार्थियों और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य को उन्नत करने पर अधिक बल डालता है। जब शिक्षार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य विकसित होता है, तो वे पाठ के प्रति, शिक्षकों के प्रति, अपने साथियों के प्रति एक धनात्मक मनोवृति विकसित कर लेते हैं।

5. **प्रभावी शिक्षण विधियों को पहचान में**(In isolating effective teaching methods) – शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण के भिन्न–भिन्न विधियों की पहचानने में मदद करता है तथा इनके सापेक्ष उपयोगिताओं पर बल डालता है। शिक्षक इन विभिन्न विधियों में से उत्तम विधि की पहचान करके उसका उपयोग कक्षा में करते है। इससे छात्रों का शैक्षिक प्रतिफल तो मजबूत होता ही है साथ–ही–साथ अध्ययन में उनकी अभिरूचि, मनोवृति आदि पर्याप्त बनी होती है।

6. **पाठ्यक्रम के निर्माण में**(In construcation of curriculum)– शिक्षा मनोविज्ञान का मूल तत्व छात्रों की अवश्यकता, उनकी विकासात्मक विशेषताएँ, सीखने के पैटर्न एवम् समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखने पर बल डालता है। शिक्षक तथा शिक्षा मनोविज्ञान इन मूल तत्वों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम का निर्माण करते हैं।

7. **समूह गतिकी को समझने में** (In understanding group dynamics)– अभी के समय में शिक्षा मनोवैज्ञानिको द्वारा कक्षा के शिक्षण एवं पठ्न–पाठ्न में सामाजिक व्यवहार तथा समूह गतिकी के कारक को महत्त्वपूर्ण बताया गया है। इन कारकों को समझने से शिक्षक–छात्र अंतःक्रिया उन्नत हो जाते है। शिक्षर्थी कक्षा में उत्तम अनुशासन बनाए रखते हैं तथा उनके इस प्रयास में शिक्षक भी सही मार्गदर्शन कर पाते हैं। इसका प्रभाव शिक्षार्थियों पर तथा सीखने की प्रक्रिया पर उत्तम होता है।

8. **अपवादात्मक बच्चों की शिक्षा के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने में**(In providing guidance to the education of exceptional children)– शिक्षा मनोविज्ञान अपवादात्मक बच्चों जैसे कुशाग्रबुद्धि के बच्चों तथा मानसिक रूप से मंदित बच्चों की शिक्षा–दीक्षा में विशेष मार्गदर्शन प्रदान करता है जिससे ऐसे बच्चों की व्यावहारिक कठिनाइयाँ काफी दूर हो जाती है और शैक्षिक माहौल में विशिष्टता आ जाती है।

9. **शोधकार्यों में** (In conducting research)– शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा के क्षेत्र में नए–नए शोधों को भी प्रोत्साहित करता है, जिससे मनोविज्ञान का महत्त्व काफी बढ़ा है। इसी शोध का परिणाम है कि नए–नए

शिक्षण विधियाँ, नए–नए शिक्षण उपकरण, श्रव्य–दृष्टि सहायता आदि का प्रयोग कक्षा में पठन–पाठन में किया जा रहा है।

सारांश –

शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षा के सभी क्षेत्र को प्रभावित करता है, शिक्षा को प्रभावी बनाने में शिक्षा मनोविज्ञान का महत्त्व अतुलनीय है. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षक एवम् छात्र दोनो के लिए समान रूप से कार्यगर होते हुए भी इसकी कुछ सीमाएँ हैं जा निम्न हैः–

1.सिर्फ नियमों, तथ्यों एवम् सिद्धांतो के मात्र ज्ञान हो जाने से ही सीखने–सिखाने का माहौल अपने–आप अच्छा नही बन जाता है. सच्चाई यह है कि जब इन नियमों, तथ्यों एवम् सिद्धांतों पर शिक्षक तथा शिक्षार्थी एकजुट होकर अमल करते हैं तभी कही जाकर सीखने–सिखाने का उचित माहौल बन पाता है।

2.शिक्षा मनोविज्ञान से शिक्षा संबंधी उपयुक्त तथ्यों का तो ज्ञान हो जाता है, परन्तु मनोविज्ञान यह नही बताता है कि इन तथ्यों का किस प्रकार उपयोग सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में किया जाता है।

इस तरह स्पष्ट है कि शिक्षा मनोविज्ञान की कुछ सीमाएँ भी है जिनके कारण इस मनोविज्ञान की उपयोगिताएँ प्रभावित होकर संकुचित हो गई है।

REFERENCES:

1 **Beloff,J**.: Psychological Sciences. A Review of Modern Psychology. London:Crosby Lockwood Staples,1973.
2 **Feletti,G**.:TheChallenge of Problem-based Learning,London,Kogan,1991.
3 **Gijselaers, W.H**.: Bringing Problem-Based Learning to Higher Education:Theory -Practice,San Francisco,Jossey-Bass Publishers,1996.and
4 **Hallenger,P.:** Problem-based Learning for Educational Administrators, Oregon,ERIC Clearinghouse on Educational Management,1992.
5 **james.W.** The Principles of psychology. New York: Henry Holt & Co.1896.
6 **Millican, J**.: Adult Literacy, A Handbook for Development Education, Oxford, Oxfam,1995
7 **Ridley,T.:**Cool School : An Alternative Secondary School Experience, Toronto,Ontario :Institute for Studies in Education,1977.
8 **Singh,Arun Kumar,1997**: Educational Psychology. Bharti Bhawan Publication.
9 **Smith, M.K.** : Local Education, Community, Conversation, Action, Buckingham,Open University Press,1994.
10 **Westland,G**.: Current Crises of Psychology. London:Heinemann,1978.